

আম্ম কবিতা

1.882

I

ASHA ARCHIVES

318 vidhi
karmu
kanda

नोअमयंवदामद्रमधस्तांनोवदमभुपरिष्ठांनोवदामद्रम
कनआवदुमद्रनःसर्वतोवद॥असपत्नपुरस्तान्तःशिवंदसि
रामास्त्रिधि॥अमयसततंपश्चादुद्रमुत्तरतोगृहे॥योवनानि
महसिसजिगुषानिवदुंदुभिः॥सकुंतकप्रदक्षिरांशातपुत्राभि
मोव॥आवदंस्त्वशकुनेमद्रमाधदनूमीमासीनःसुमतिंवि
किदिनः॥यदुत्पतंवदसिकर्करिथारुहदेमविदपेसुवीराः
॥२॥इतिकमिकेदत्त॥॥अभुःशिसानोवेषभोनमीमोचत

घनःशोभराश्वर्षवलीनामासंकदूनेमिभिषट्कवीरःशात
हंसेनानोआजयत्ताकमिद्रः॥पञ्चाग्रनेदरसुपैतिदैवंतदुसुप
स्वेतथैवैति॥दूरंमंज्योतिषांजोतिरेकंतमेमनःशिवसंकल्पम
लु॥ऐसहस्रशीर्षपुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्सभूमिदंसर्वत
त्पत्तात्यभिषुसंगुलम्॥ऐविभ्रादुहंपिवतुसोमंमध्यायुद्दि
धनेज्ञपतावीवदुतंवातजुतोयोअभिरक्षितमनाप्रजाःपूषोषतु
यविराजति॥नमस्तैरुद्रमन्यवऐतोतइषवेनमः॥बाहुभ्यामुत्तमेनमः॥

उवय पूंलोमवृत्तेन वमवस्तनं पुविभुतः पुजावंतः सवेमहि ॥ एषतेह
 द्रुभागः सहस्रान्मिथुनानां नुषस्वत्वाहैषतेह द्रुभागमावृत्तेपशुः ॥ २॥ अ
 वरुद्रमदीनस्तवदेवं संवकम् ॥ यथानोवत्सस्तत्कारग्रथानः त्रयस्तत्क
 रग्रथानोवत्सायत्यात् ॥ ३॥ मेषजमसि मेषजंगवेष्यापपुरायाय मे
 षयम् ॥ सुरं मेषाय मेधे ॥ संवकं यजामहे सगधिस्पृष्टिवद्धवंम् ॥ ४॥
 रुक्मिव वंधनो नृत्तोर्ध्वं क्षीयमायतात् ॥ संवकं यजामहे सगधिपतिर्व
 दनम् ॥ उर्वीरुक्मिव वंधनो नृत्तोर्ध्वं क्षीयमायतात् ॥ ५॥ एतन्नेह द्रुव

सतेन परोमृजवतोतीहि ॥ अवततधन्वापिनाकावसः कृतिवासा
 अहिर्ः सन्नः शिवोतीहि ॥ ६॥ आसुषं जमदग्नेः कस्य पश्य आसु
 षं ॥ यद्वेषु आसुषं ततो अस्तु आसुषम् ॥ ७॥ सिवो नासासि स्वधि
 तिस्रेपि तानमस्ते अस्तु मानाहि ॥ ८॥ निवर्तयाम्यासुषेनायाय प्रजन
 नाय रायस्मोषाय सुप्रजात्वाय सुवीर्याय ॥ ९॥ ऐयोः शान्तिरिती ॥ १०॥
 इतिलघुषडंग ॥ ॥ थंकातिनकिनी नमवातसोयावहय ॥ असुरमि
 ॥ मराउलथेलात्रफेकतुधके ॥ निर्मह्व ॥ ऐरक्षोहनंशति ॥ इपुकापु

कानगाते॥ कैलषतयावृत्तिसा॥ ॐ अ ध्य वे व द धि व क्ता प्रथमे
 देवो भिषक॥ अही श्वसुनी न जं भयं सर्वी श्वया तु धान्यो घरायी
 : परावसु॥ मततये॥ ॐ ते जो सि॥ अर्घ्यपात्रयलषनहाये॥ ॐ देव
 स्वता॥ मिसनी पिषातु पुस होय॥ मवा कलसकि गो लत न के॥ सं
 पूर्ण कलसाय इदमासनं॥ पुष्पं॥ इपि उमा मते इदमासनं॥ पु
 ष्पं॥ स्वारथान क्षत्रया लाय वही दारां गरोभ्यः इदमासनं॥ पुष्पं
 ॥ ॐ सूर्या म नारायणा य सदा शि वा म गृह लक्ष्मी ष्टे देव ता य वर

रा नाग राजा य इदमासनं॥ पुष्पं॥ गरा योग्रा सकौ मा र्ये इ
 दमासनं॥ पुष्पं॥ ॥ एवं मादार्घ्य रुस्तार्घ्य च द्रुनय जो प वी त क
 धूपदीपं नमः॥ अत्र गं धादि॥ मत पं ता उ धा पूजा या य॥ अग्नि मू
 र्ति॥ त्र्यविष्टा॥ मत पं ता उ धा न लाय॥ सगुरां ता ये॥ सगुरादे
 वतिन के सकस्त॥ धनं लिय था कर्म गुगु कर्म जुल उ गु ति या ये॥
 नाम करि फलान प्राप्ता न जुल सा विथ न वित्त क॥ बूडा करी वृत्त
 बंध जुल सा मुनि दाय॥ ॐ कां रा त॥ ना नि गो स्व गो ल न हु व के॥ वि
 ॐ कां डा न् २ पु रो हं ति पु रु षः पु रु षा द धि । ए वा नो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

धनतिचको सगुणविय ॥ बुसवाय जुलसा सिद्धयये पाजुनिदिया
हा तपूजा वेलास पाजुन सी हस धेने स फय नितीन ॥ जौ ओ हनुलुन
इ स्या तसधि धं विद्रुतय ॥ लासा वा को को तयेने ॥ असुराधि ॥ मोल
य का को लासा ता को हय ॥ निर्मीरुन ॥ कलश सकि गो लत नके ॥ को ल
वाय जुलसा मत फं न त्वा मय ॥ विधन धेलसा पाय ॥ बट बधु भवेत्स
व दक्षिणो दु म्बलंतथा ॥ अश्वस्थं व भवे वामे पश्चिमे पृक्षमे वर सु
गी मुद्दी काम अय दर्भ युष्य स मन्वितम् ॥ मध्य पंचशिवा स्थाने बु

डा कर्ता समन्वितम् ॥ सिंह न घाय शोक सति बोय हा मत न हाय ॥
वीरु श्वमे ॥ कुर्यात कानहिने पात कानहिने स स पा पा नहिने कुश
बुन पिये सगुण विपे ॥ सि फ अरति प्रति पं ते याये ॥ व्रत बंध जुलसा म
त फं ला ड वा सगु नं त्वा ये ॥ कस्तान त्वा य ॥ सगुण विप सि फ ला रति प्रति
पं तं दक्षिणा छाये ॥ स्वस्थान याय अभिषेक विय च दून सि दूर
भा सी की द विय ॥ सा सि थाय ॥ ना क म कर्ता फं ला न प्रा स न जुलसा
सगुण विप ना क कर्म जुलसा ग्वान न त्वा ये ॥ धं का तिन नाम धुये

॥ ग्वा लसचोन घृत भक्षण यात के - डा पविन ॥ ग्वातको घात तये - नोती
चके क लष होय - सिफ आरति प्रतिष्ठात - दक्षिणा द्याये ॥ (विसर्जन
अभिषेक विधिवान ॥ जल हस्कन सोये ॥ पूर्ण चंद्र ॥ जका जुलसा निर्मल
जादि उथं ॥ सिपति निवाय ॥ संकल्प पाये प्राप्त नया चके ॥ को था सतये
॥ नोति चके - तिसा नुन त्वाये ॥ तिसा काय के - गानधु चके - जान त्वाये ॥ अन्न
सकल ॥ कतिविये प्राप्त नया चके ॥ स्वस्ति वाचन पठेत् ॥ नोति चके ॥ वाता
सकल वो तय ॥ कतं वा चके ॥ सिफ आरति प्रतिष्ठात ॥ दक्षिणा द्याये के ॥ विष्णु

वाये ॥ अभिषेक विधाय ॥ वदून सिद्धर - सुगुणा शी वंद ॥ हस्क के नोसा
स्थि थाये ॥ संस्था के जुलसा ॥ वाक्य जमान स्य के सत्ता बंधन कलसा
वन पूजा निमित्त थं ॥ भालत नत्ता सा ता बोहये ॥ निर्मल जादि ॥ कलश
सकि गो लतन के ॥ हस्तार्चन वारध - चंद्र नसिद्धर - य सो पविन क - पुष्प - अन्न
धादि ॥ मंडल - स्तोत्र ॥ मर्ति स्तं ॥ अग्रि लोहर शा - सुगुण त्वाय स गंतये ॥
सकल तया गुं त्वाये ॥ सयल फे ने ॥ वृसा पान सो वेधय - फल थक
के ॥ मतुन तु कं सिद्ध फाय ॥ कुल लका यात का नहि ने ॥ ओ गल सिह

न. स्वसूता पाकु सवु राया हुतके. सिद्धर मूडल बोहाये. देवतन के. सक
लतिन के. सिद्धर हाये. सिद्धर मूड. बोहाये. अजलन उल के. देल सतये
रूकन के तो ॥ ॥ धकानि नकि नीन सगु राविय के विसस्त ॥ मटिक
ति पुरुष यात विये ॥ तम कमिसा यात विये ॥ मिफ अति प्रतिष्ठात ॥ द
क्षिणा हाये के. कृष्णिक सि होत पन के. मीठ दुस्सा. सकल देवस्त छाप
के सकल विय के. न्यास लिकाये ॥ स्वस्थान याये ॥ अभिषेक माशी कीद ॥ सा
क्षिमाये ॥ ॥ शुभं ॥ अथ वाक्य ॥ यजमानस्य पुत्रवा. यौत्रवा ना मकर्षी घ

स प्रासन कलसार्चन पूजानिमित्त्यर्थं कमंडलु पुष्पं भाजनं सप्रपया मि नमः ॥ वि
धिवत् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ यदु मंत्रिरय ते ॥ नमकर्षी. नासात्मा बोस्वस्ति
कासन सनये ॥ असुराधि ॥ निर्मह नादि ॥ रक्षो हरां ॥ के लं ववती सने ॥ ३ अथ
बोवा ॥ मतते ॥ ते जेसि ॥ अर्घ्य पात्रया संवन होये ॥ ४ देवस्य त्या. वति मि. पिषालं
पुस होय ॥ कलशादितन के ॥ धूप दीप ॥ स्तोत्र ॥ मत. फे पूजा ॥ अग्नि मूर्द्धा ॥ ता
उवा पूजा ॥ आतार मिद्ध ॥ मत फे नत्वाय ॥ असुराधि ॥ ताउ जानत्वाय ॥ सगुन नत्वा
ये ॥ सगुण वातो ॥ सगुणो देवतिन के ॥ सगुण विये ॥ चद्रन. सिद्धर. सगुण विय



288

12-11-18

हम



五



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



I	/ 882	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्री कृष्णाय नमः
---	-------	---

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



॥ शिवा तपो ॥ मिदुवंस्वानतया बोलबो ह्य ॥ वसोऽववित्रमसि ॥ दीर्घायु
त्वा ॥ थंकातिनकिनी निते ॥ सगुणांतिपे ॥ स्वानकाये ॥ ग्वालं त्राये ॥ असु
रिप्रि ॥ थकालिननामदुय ॥ ग्वालसवोनघ तपचयासयवके ॥ ग्वाल के
थासतये ॥ नोसिवके ॥ कालंख होये ॥ सिफ भाति ॥ पाः फलिनी ॥ ॐ तेजो
सि ॥ ताय होते ॥ मनोजूतिप्रतिष्ठा ॥ दक्षिणा होये ॥ त्यासति काये ॥ स्वस्थान
माये ॥ जेदयंत ॥ सिद्धमंडलबो होये ॥ सगुणांति ॥ अभिषेक बदनसिद्ध
र ॥ सगुणां शीर्ष ॥ हस्कं केने ॥ पूरी बद्ध ॥ साक्षि थाये ॥ शुभम् ॥ ॥ ग
म करारिया भा शीर्ष ॥ ॐ काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा धिमाधिता

ये स्वाहा मनवे स्वाहा वित्तविज्ञातायादि तैस्वाहा दितैर्महैस्वाहा दितैस्तु
मडी काये स्वाहा सरस्वतैस्वाहा सरस्वतैपावकाये स्वाहा सरस्वतै ब्रह्मस्यै
स्वाहा पूजे स्वाहा पूजे प्रपञ्चाय स्वाहा पूजे तरंगिण्याय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा
त्वष्ट्रे तुरीयाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुषाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निभूयया
य स्वाहा विष्टवे सिधिविष्टाय स्वाहा ॥ इति नाम करनम् ॥ ०० हूं ॥ ० हूं ॥
जयंते को ॥ मय ॥ वाक्य ॥ यजमानस्य पुत्रस्य वा फलान प्राप्तये कल्पशा वन पूजा
निमित्त कमराडु पुष्प भोजनं समर्पयामि नमः ॥ केतनके ॥ कलशादि ॥ पूर्वव

॥ जा भलत बोहोये ॥ ब्राह्मणौ न कलशावनम् ॥ मथा कर्म धेसेंति थका
लिन किनी नलं सोया हय ॥ असुराधि ॥ कोपती सफे कतुपे ॥ मिर्मिदुन पाय
॥ मिर्मिदुन ॥ रसोरतां ॥ केतरं वतीते ॥ ॐ अथ बोच प्रतये ॥ ते कोसि ॥ मिसती
पिषाते पुस होमा ॥ कलसादि कि गोतन के ॥ भूपदी पातं ॥ अत्र गं पादि ॥ स्तोत्र
॥ मंदलुस योत स्वा नंदु य के सिफ ताडवाने त्याय ॥ सगुरा देवत न के सगुरा विय
॥ ओ सतन तिय के ॥ थका लिन सिपति तं त्याय के ॥ ॐ असुराधि ॥ फल संकल्प
देवता ॥ फल पंच ग्रास याव के ॥ सिपति को था सतय ॥ था भु या तल सता के ॥ सि
पति दु मु वा ता सतय ॥ कत पं होय ॥ आशी वीद ॥ माः फलिनी ॥ जेत हं स पूजा

याय ॥ मवा पा पुनु सहं सन वा लके ॥ अग्नि मूर्द्धा ॥ विसा भूं त्याय ॥ असुराधि ॥ तिसा
काय के ॥ वानि गो तं दु त के ॥ सूर्या दि वो तय ॥ था भूं त्याय ॥ असुराधि ॥ अत्र
संकल्प देवता ॥ वति विये ॥ पंच ग्रास याव के ॥ क ॥ का सो पो त ह्य तु स धिय
का वो वा ता सतय ॥ स्वस्ति वाचन बोने था भु को था स सिपति या घो ने तात के
तय ॥ नो सि त के ॥ वा ता स कलं च वा तया बो होये ॥ जं नो कोषा व को स्वाय
के ॥ ॐ आहु मे ॥ सिफ आरति प्रतिष्ठा दं क्षिरा द्वा य ॥ न्या सति काये ॥ स्व
स्थान पाये ॥ अभिषेक आशी वीद ॥ वद न सि दूर सक सं काये ॥ साक्षि थाये

धानत (पुस) होय ॥ माषापितयेने देवया दर्शनयाचके ॥ अंजसनाशीकार ॥ ३
अंनपतेनस्यनोदेस्त ॥ इति अन्नपानविधिः ॥ शुभं ॥ अथबूडाकर्मकर्ता
भेदनीविधिः ॥ ह्रापंनासिय ॥ पूजाभलजपयकेथं कालीन ॥ अथवाक्य ॥
यजमानस्यपूजवापौत्रस्य बूडाकर्मकर्ता भेदनकलशार्चनपूजानिमित्त
र्थं कर्तुमंडलुपुष्पभाजनं समर्पयामिनमः ॥ श्रुष्टं शांतासिद्धिरस्तु ॥ यथा
वासां तं कर्मंडलुपुष्पभाजनं समर्पयामिनमः ॥ अभियाचके ॥ कलसादिवाह
राजोसि आचार्या तं केतन के ॥ पूजाभललवो ह्राय ॥ ब्राह्मणेराविधिकर

शाचनम् ॥ यथा कर्मसंभं कालिनकितीनमवातासातावोहये ॥ स्वस्ति
कासनसतये ॥ निर्मळतयाचके ॥ कलससकिगोततनेके ॥ पूषदीपांतं
अंतं ॥ मंडलसवोनस्वानंकुतके ॥ मतकंताडवापूजा ॥ मतपंनलाय तांवा
नत्वाय ॥ सगुरांत्वाये ॥ सगुरावाले ॥ देवतनके ॥ सुकालिविंताय सुहाय ॥
कांडात्कांडात् ॥ वाणिगोसो लंकुतके ॥ दीर्घायुस्त्वाय ॥
कयतापूजायाविधिः ॥ नोसिय ॥ पुष्पभाजना ॥ कर्मंडलुपुष्पभाजनं समर्प
यामिनमः ॥ अभियाचके ॥ ब्राह्मणेन कलशार्चनम् ॥ यथा कर्मसंभं

नातिनकि नीन ~~कस्तोविषय~~ कस्तोविषय लासाना नो कस्त स पाहु बोनेस्व
स्ति कासनसतेनि म्मि रु नादि॥ कलशादि कि गोलतनके॥ स्तोत्र तं यावके॥ मं
उतस बो नखानंदु तके॥ सगुरां त्वाधके॥ सगुरा देवतनके॥ तुच्छातिवि
नं त्वाया॥ असुराधि॥ सुखाय॥ दीर्घायुस्त्वाया॥ ॐ कारात् कारात्॥ वानि
गोसोगोलं दु तके॥ दीर्घायुस्त्वाया॥ ॐ असुराधि॥ सगं विय के वायात॥
लासा लो न उया था सयेने स्वस्ति कासनसतय॥ नधया हाष्ट पूजा दंष्ट
मतय चद्रमण्डल भूल के हूय॥ लुसि येनके॥ मोल हूय का बो थतयेने

॥ स्वस्ति कासनसंतय॥ मि म्मि रु न घाया॥ के गोल कलशातनके स्तोत्र तं
॥ मतपं ताउ चान त्वाया॥ सगुरां त्वाया॥ सगुरा बाले देवतनके॥ थ
कालिन कस्तान त्वाये॥ असुराधि॥ मवा धने॥ कस्तोचितके॥ पुतु
गधि सतषन होया चद्रन सगुरातया॥ पूजायाय॥ ॐ इतं कुराउतवतं
कुराउता पिर्व ह्ला गित्यं जो ववनस्य तिर्यजियः देवी प्रियं मनामहे सु
मृडी कामप्रिये वर्वो पांय न वाह स हंसुतीर्थी नो असदृशे ये देवा
नो युजो दक्षकृतवस्ते नो वं नुते नः पांनुतेभ्यः स्वाहा॥ मवाफे कतु

प्रके॥ थकालिनकिनीनयिथंतिवके॥ यदग्रका॥ सिद्धरंतिवके॥ त्वं
पविष्टदा॥ सगंधतितिवके॥ उदपिकाग्रो॥ ओसतस्वातग्ववस्त
यावो लवो ह्राये॥ उवसोः पवित्रमसि॥ उदीर्घायुस्वाय॥ सिफलुतयो॥
उयाः फलिनीयी॥ सोपोतलुतके॥ इत्तापुत्र्याडावो वजिफेयागु
तिसमवाया त केनावो वंसतय॥ उतेजोसि॥ सकस्या नंतायरोस
केमलावाता॥ उमनो जूति॥ सुप्रभावरदाभवतु॥ थनदुसिरादा
प्रके॥ कतकदं १२ दाय॥ प्रोक्षणा॥ जोसि॥ अवार्य॥ नोसिनावो न्यासति

काये॥ कलशस्थस्थानयाये॥ उ॥ उदयंतमसम्यगिस्वत्यंशंतउत्तर
मदेवंदेवत्रासूर्यमगन्मेज्योतिरुत्तरमा॥ केतनेगु॥ नकिन्यातसि
दूरमूडलवो ह्राया॥ ज्वलाहस्कंगोलननुयके॥ अभिषेकविषा॥ देव
स्यत्वा॥ बहूनादि॥ कलसयास्वानकोकायावो॥ थमंनिस्यस्वानिपि
य॥ थं कालीनहूस्कन उकारसुस्यं सोतके॥ उ॥ पूर्णवहू॥ साशि
थामि॥ स्वा॥ नकिगोलज्वनकंते॥ यजमानस्यपुत्रवापौ त्रस्यवामेष
गबंधनकलशार्चनपूजानिमित्त्यर्थं कृतकर्मणाः साक्षिरोध्या

कांदात् मांदात् पोहं

सूर्यार्धो जमः ॥ लूहिदुः बोधि लेवा फेसिकधि कमान् वाता
मजाया तल बोहाया ॥ देशं तरयेने ॥ कृतिव्रत वंध्यविधिः ॥ शुभ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥